যঈফ ও জাল হাদিস

হাদিস নাম্বারঃ ৬৫৫

১/ বিবিধ

আরবী

إذا انفلتت دابة أحدكم بأرض فلاة فليناد: يا عباد الله احبسوا علي، يا عباد الله احبسوا علي، فإن لله في الأرض حاضرا سيحبسه عليكم ".

ضعيف

رواه الطبراني (3 / 81 / 1) وأبو يعلى في " مسنده " (254 / 1) وعنه ابن السني في " عمل اليوم والليلة " (500) كلاهما من طريق معروف بن حسان السمرقندي عن سعيد بن أبي عروبة عن قتادة عن عبد الله بن بريدة (1) عن عبد الله بن مسعود مرفوعا. قلت: وهذا سند ضعيف، وفيه علتان: الأولى: معروف هذا، فإنه غير معروف! قال ابن أبي حاتم (4 / 1 / 333) عن أبيه إنه " مجهول

وأما ابن عدي فقال: إنه " منكر الحديث "، وبهذا أعله الهيثمي (10 / 132) ، فقال بعد أن عزاه لأبي يعلى والطبراني: " وفيه معروف بن حسان وهو ضعيف ". الثانية: الانقطاع، وبه أعله الحافظ ابن حجر فقال: " حديث غريب، أخرجه ابن السني والطبراني، وفي السند انقطاع بين ابن بريدة وابن مسعود ". نقله ابن علان في " شرح الأذكار " (5 / 150) . وقال الحافظ السخاوي في " الابتهاج بأذكار المسافر والحاج " (ص 39) : " وسنده ضعيف، لكن قال النووي: إنه جربه هو وبعض أكابر شيوخه ".

قلت: العبادات لا تؤخذ من التجارب، سيما ما كان منها في أمر غيبي كهذا الحديث، فلا يجوز الميل إلى تصحيحه بالتجربة! كيف وقد تمسك به بعضهم في جواز الاستغاثة بالموتى عند الشدائد وهو شرك خالص. والله المستعان

وما أحسن ما روى الهروي في " ذم الكلام " (4 / 68 / 1) أن عبد الله بن المبارك ضل في بعض أسفاره في طريق، وكان قد بلغه أن من اضطر (كذا الأصل، ولعل الصواب: ضل) في مفازة فنادى: عباد الله أعينوني! أعين، قال فجعلت أطلب الجزء أنظر إسناده. قال الهروي: فلم يستجز. أن يدعو بدعاء لا يرى إسناده ". قلت: فهكذا فليكن الاتباع. ومثله في الحسن ما قال العلامة الشوكاني في " تحفة الذاكرين " (ص 140) بمثل هذه المناسبة: " وأقول: السنة لا تثبت بمجرد التجربة، ولا يخرج الفاعل للشيء معتقدا أنه سنة عن كونه مبتدعا
وقبول الدعاء لا يدل على أن سبب القبول ثابت عن رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقد يجيب الله الدعاء من غير توسل بسنة وهو أرحم الراحمين، وقد تكون الاستجابة استدراجا
وللحديث طريق آخر معضل، أخرجه ابن أبي شيبة في " المصنف " (12 / 153 / 2) عن محمد بن إسحاق عن أبان بن صالح أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: فذكره نحوه. وهذا مع إعضاله، فيه ابن إسحاق وهو مدلس وقد عنعنه، والأصح عن أبان عن مجاهد عن ابن عباس موقوفا عليه كما يأتي بيانه في آخر الحديث التالي

বাংলা

৬৫৫। যদি তোমাদের কোন ব্যক্তির পশু মরুভূমিতে হঠাৎ করে ছুটে যায়, তাহলে সে যেন ডাক দেয়ঃ হে আল্লাহর বান্দারা তোমরা আমার জন্য ধর, হে আল্লাহর বান্দারা তোমরা আমার জন্য ধর। কারণ যমীনে আল্লাহর উপস্থিত বান্দা রয়েছে সে দ্রুত তাকে তোমাদের জন্য ধরে আনবে।

হাদীছটি দুর্বল।

এটি তাবারানী (৩/৮১/১), আবু ইয়ালা তার "মুসনাদ" (১/২৫৪) গ্রন্থে এবং তার থেকে ইবনুস সুন্নী "আমলুল ইয়াওয়াম ওয়াল লাইল" (৫০০) গ্রন্থে মা'রূফ ইবনু হাসসান আস-সামরিকান্দী সূত্রে সাঈদ ইবনু আবী আরূবা হতে তিনি কাতাদাহ হতে ... বর্ণনা করেছেন।

আমি (আলবানী) বলছিঃ এ সনদটি দুটি কারণে দুর্বলঃ

১। বর্ণনাকারী এই মা'রূফ পরিচিত নন। ইবনু আবী হাতিম (৪/১/৩৩৩) তার পিতার উদ্বৃতিতে বলেনঃ তিনি

মাজহুল। ইবনু আদী বলেনঃ তিনি মুনকারুল হাদীছ। হায়ছামীও (১০/১৩২) এ কারণই দর্শিয়ে বলেছেনঃ তাতে মা’রূফ রয়েছেন, তিনি দুর্বল।

২। সনদে বিচ্ছিন্নতা। হাফিয ইবনু হাজার এ সমস্যার কথাই উল্লেখ করেছেন। তিনি বলেছেনঃ হাদীছটি গরীব, সনদে আব্দুল্লাহ ইবনু বুরায়দাহ এবং ইবনু মাসউদের মধ্যে বিচ্ছিন্নতা রয়েছে। ইবনু আলান “শারহুল আযকার” (৫/১৫০) গ্রন্থে তা উল্লেখ করেছেন।

হাফিয সাখাবী বলেনঃ সনদটি দুর্বল। কিন্তু ইমাম নাবাবী বলেনঃ তিনি ও আরো কতিপয় বড় শাইখ বিষয়টি পরীক্ষা করে দেখেছেন।

আমি (আলবানী) বলছিঃ কোন ইবাদাত পরীক্ষা করার মাধ্যমে গ্রহণযোগ্য হতে পারে না। বিশেষ করে যদি সেটি গায়েবী ব্যাপারে হয় যেমন এ হাদীছটি। অভিজ্ঞতা আর পরীক্ষা করার দ্বারা কোন হাদীছকে সহীহ সাব্যস্ত করা জায়েয না। এ হাদীছটিকে কেউ কেউ মৃত ব্যক্তির নিকট বিপদের সময় সাহায্য প্রার্থনা করা যাবে মর্মে দলীল হিসাবে গ্রহণ করেছেন। নিঃসন্দেহে তা নিছক শিরক।

হাদীছটি অন্য একটি সূত্রেও বর্ণিত হয়েছে, কিন্তু সেটি মু’যাল। তা ছাড়াও তাতে ইবনু ইসহাক নামের এক মুদাল্লিস বর্ণনাকারী রয়েছেন।

হাদিসের মান: যঈফ (Dai'f) পুনঃনিরীক্ষিত

পাবলিশারঃ তাওহীদ পাবলিকেশন

Link — https://www.hadithbd.com/hadith/link/?id=71534

হাদিসবিডির প্রজেক্টে অনুদান দিন